क़ुर्रतुल-एन-हैदर
Qurratulain Hyder

उर्दू की विशिष्ट कथाकार क़ुर्रतुल-एन-हैदर को अपना सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी गौरवान्वित है।

आपका जन्म 1927 में अलीगढ़ में एक ऐसे परिवार में हुआ, जिसे साहित्य से बेहद लगाव था। इज़ाबेला थॉबर्न कालिज से स्नातक होने के बाद आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में एम.ए. किया। आपने गवर्नमेन्ट स्कूल ऑव आर्ट्स लखनऊ में और फिर लंदन में कला की विधिवत् दीक्षा ली।

आपका पहला कहानी-संग्रह *सितारों से आगे* भारत-विभाजन के कुछ ही समय बाद प्रकाशित हुआ था जब आपकी आयु केवल 19 वर्ष थी। विभाजन का त्रासद अनुभव निरंतर आपके संवेदनशील मन पर रहा तथा परवर्ती कृतियों में उसका प्रभाव देखा जा सकता है। विभाजन के बाद वे कुछ वर्षों के लिए पाकिस्तान चली गईं पर अंततः भारत लौट आईं। आधुनिक भारतीय साहित्य को आपका योगदान इस दृष्टि से भी बहुत मूल्यवान है कि उग्र साम्प्रदायिक अलगाव के दबाव में बदलता समाज-सांस्कृतिक परिदृश्य आपके लेखन में दस्तावेज़ की तरह अंकित हुआ है। आप सिर्फ़ बाहरी ही नहीं बल्कि ऐसी कई भीतरी लड़ाइयाँ भी लड़ती रहीं जिनमें कभी आपकी हार हुई तो कभी जीत। आपके जीवन-दर्शन ने हमारी उस संस्कृति को जिसमें हम साँस ले रहे हैं, सशक्त और प्रगतिशील ढंग से प्रभावित किया है।

आपकी दूसरी कृति *मेरे भी सनमख़ाने* (1949) से प्रकट हुआ कि वे अपने दौर से आगे देखनेवाली चिन्तक हैं। पचास के दशक में लिखे गये विशिष्ट उपन्यासों में से एक, यह कृति तरल आत्म-साक्षात्कार और वैविध्यपूर्ण आख्यान-तत्वों के विदग्ध तालमेल का अनुपम उदाहरण है। इस कृति ने उन्हें एक ऊँचे पाये का उपन्यासकार साबित किया और इसके बाद आपकी क़लम अविराम चलती रही। एक और उपन्यास *सफ़ीना-ए-ग़म* 1952 में प्रकाशित हुआ, जो आपने इंग्लैण्ड-प्रवास में लिखा था और जिसे आपने अपनी गहन पीड़ा की अभिव्यक्ति कहा है।

आपकी सर्वोत्तम उपलब्धि 1959 में प्रकाशित उपन्यास *आग का दरिया* है जो काल और घटनाओं के पूर्व-निर्धारित चक्र को चुनौती देता प्रतीत होता है। ईसापूर्व तीसरी सदी से आधुनिक युग तक 25 शताब्दियों के अविरल काल-प्रवाह को समेटते हुए इसमें भारतीय संस्कृति के सारभूत प्रवाह की गाथा वर्णित है। यह कार्य तकनीकी दृष्टि से भी चुनौतीपूर्ण था, लेकिन क़ुर्रतुल-एन-हैदर ने ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं संवेदनापरक आधारभूत सच्चाइयों को तपाकर हमारे लिए एक ऐसा

Qurratulain Hyder on whom the Sahitya Akademi confers its highest honour of Fellowship today is a distinguished Urdu novelist and short story writer.

Born in 1927 at Aligarh in a family of lovers of literature, she studied in Isabella Thoburn College and took her M.A. in English Literature from the University of Lucknow. She went on to study art at the Government School of Art, Lucknow and later in London.

Her first book *Sitaron se Aage*, a collection of short stories was published soon after the partition when she was barely19. As an artist and a sensitive youth she was deeply affected by the traumatic experience of partition which continued to haunt her for years and later found expression in many of her works. After partition she migrated to Pakistan for a few years but finally returned to India. Her contribution to modern literature is valuable also as a socio-cultural document of the changing times when communal divide was abysmally pronounced. She had to fight many an inner battle and has known both triumph and defeat. Her philosophy has been a powerful and progressive influence on the culture in which we live.

Her next book, *Mere bhi Sanamkhane* (1949) showed her as a thinker ahead of her times. Acclaimed as one of the celebrated novels written in the fifties, the work exemplified fludidity of self-revelation and ingenious use of numerous narrative elements. It established her as a novelist with great promise and she never had to look back. It was followed by another novel *Safinah-e-Gham*, perhaps the most lyrical of her works published in 1952 while she was in England and which she describes as an expression of her anguish.

Her finest achievement *Aag ka Dariya* which came out in 1959 is a work of enduring relevance defying premeditated chronology of time and events. The frameless and indivisible flow of time spans 25 centuries from the third century B.C. to modern times, encompassing the quintessential passage of Indian culture. The task was technically challenging but Qurratulain Hyder achieved the unbelievable, forging the historical, social, cultural and emotional aspects of reality, to give us a 'classical text' whose contradictions and discontinuities can only be grasped in relation to the

कालजयी ग्रंथ प्रस्तुत किया, जिसके अन्तर-विरोधों और विच्छिन्नताओं को उस तात्विक अनिश्चय में ही समझा जा सकता है जो कि संक्रमण की प्रक्रिया में अंतर्निहित होता है। अपेक्षा के अनुरूप यह उपन्यास आधुनिक भारतीय कथा-साहित्य में एक कीर्तिमान साबित हुआ और विश्व की प्रमुख भाषाओं में इसके अनुवाद भी हुए।

वर्ष 1967 में क़ुर्रतुल-एन-हैदर को कहानी संकलन *पतझड़ की आवाज़* के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके बाद दो खण्डों में आपका विवादास्पद उपन्यास *कार-ए-जहाँ दराज़* है प्रकाशित हुआ जिसमें आत्मकथात्मक संकेतों का बाहुल्य है। आपकी अपनी सामाजिक पृष्ठभूमि को उजागर करता यह उपन्यास व्यक्तिगत और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। एक लंबे समय से अपने जीवन के तथा निकटस्थ लोगों के अनुभवों का अर्थ खोलने का दर्दनाक मुद्दा आपके मन को मथता रहा था।

आपकी नई कृतियों में *आख़िर-ए-शब के हमसफ़र* (1979), *गर्दिश-ए-रंग-ए-चमन* (1987) और *चाँदनी बेगम* (1990) काल और केन्द्र-बिन्दु के बदलाव को रेखांकित करती हैं। *आख़िर-ए शब के हमसफ़र* बाङ्लादेश बनने के पहले बंगाल में आतंकवाद के बारे में है। राजनैतिक उथल-पुथल के व्यापक संदर्भ में यह उपन्यास मानवता के संकट और संत्रास को पूरी संवेदनशीलता से अंकित करता है। *गर्दिश-ए-रंग-ए-चमन* उपन्यास से भी अधिक एक सामाजिक-ऐतिहासिक दस्जावेज़ है जो आपकी गहरी खोज-बीन का नतीजा है। *चाँदनी बेगम* उपन्यास लखनऊ के परिदृश्य में जाति और वर्ग के भेदभाव जैसे सामाजिक महत्व के सवालों से जूझता है, जो आज भी हमें परेशान किए हुए हैं।

अपने रचनात्मक लेखन के साथ क़ुर्रतुल-एन-हैदर ने कई विशिष्ट कृतियों के अनुवाद से भी साहित्य को समृद्ध किया है, जिसमें ग़ालिब की शायरी का चुनौतीपूर्ण अनुवाद भी है। इन अनुवादों के लिए आपको वर्ष 1969 में सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपने इंग्लैण्ड में और भारत में एक पत्रकार की हैसियत से काम किया है और कुछ वर्षों तक *इम्प्रिंट* जैसे विशिष्ट पत्रों का सम्पादन किया है। आप जामिया मिल्लिया और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध रही हैं और अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों में विज़िटिंग प्रोफेसर रही हैं। आपने कई कथाचित्रों और वृत्त चित्रों के लिए आलेख लिखे हैं और वर्ष 1963 में 'मालवा' के लिए राष्ट्रपति रजत पदक से सम्मानित हुई हैं।

ग़ालिब मोदी पुरस्कार और परवेज़ मोदी पुरस्कार सहित विभिन्न सम्मानों एवं अलंकरणों से क़ुर्रतुल-एन-हैदर विभूषित हैं। कई राज्य अकादमियों ने आपको अपने पुरस्कारों से सम्मानित किया है। आपको मध्य प्रदेश का गौरवपूर्ण इक़बाल सम्मान प्राप्त है। वर्ष 1984 में आपको "पद्मश्री" से अलंकृत किया गया और वर्ष 1989 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से।

क़ुर्रतुल-एन-हैदर का जीवन अपने आप में सशक्त उपन्यास का आधार बन सकता है। आपके जीवन और कृतित्व से जुड़ी हर बात में महाकाव्यात्मक आयाम है।

उर्दू में कथा-साहित्य लेखन के क्षेत्र में श्रेष्ठता के लिए साहित्य अकादेमी क़ुर्रतुल-एन-हैदर को अपना सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* प्रदान करती है।

metaphysical uncertainties inherent to the process of transition. Predictably enough, the work has come to be held as a landmark in modern Indian fiction and has been widely translated the world over.

Qurratulain Hyder won the Sahitya Akademi Award in 1967 for her collection of short stories, *Patjhar ki Awaz,* which was followed by *Kar-I-Jehan Daraz Hai* , a controversial novel published in two volumes noted for its autobiographical overtones. Set against her social background it had an important personal-psychological value for her. Her own experiences in her life and of those who were close to her had for long remained a painful issue, driving her on relentlessly to relate their meaning to the world.

Her more recent works including *Akhir-I-Shab ke Humsafar* (1979), *Gardish-I-Rang-I-Chaman* (1987) and *Chandani Begum* (1990) mark a clear shift in terms of time focus. *Akhir-I-Shab ke Humsafar* is about the terrorism in Bengal before the creation of Bangladesh. It sensitively delineates the trials and travails of humanity at large in the course of political upheavals. *Gardish-I-Rang-I-Chaman*, essentially an outcome of her extensive research, is more of a socio-historical document than novel. *Chandani Begum*, set against the backdrop of contemporary Lucknow, addresses issues of social importance like caste and class discrimination which still haunt our minds.

Along with her creative writing, Qurratulain Hyder also has an impressive score of translations to her credit which include extremely challenging works such as Ghalib's poetry. She was honoured with the Soviet Land Nehru Award for her translation in 1969. She has worked as a journalist in U.K. and in India and has edited prestigious publications including *Imprint* for a few years. As a part of her career she has also enjoyed long fruitful associations with Jamia Millia and Aligarh Muslim University and has been a Visiting Professor to several universities in the U.S.A. She has written scripts for feature and documentary films and has received the President's Silver Medal for *Malwa* in 1963.

Qurratulain Hyder has been a recipient of several honours and distinctions which include Ghalib Modi Prize and Parvez Modi Award. Many State Academies have conferred their awards on her. She has been honoured with the prestigious Iqbal Samman of the M.P. Government. In 1984, 'Padamshree' was conferred on her and in 1989, she was given the coveted Jnanpith Award.

The life of Qurratulain Hyder has been the material of powerful fiction. Everything about her life and work has an epic dimension.

For her eminence as a novelist and short story writer in Urdu, the Sahitya Akademi confers its highest honour, the fellowship, on Qurratulain Hyder.